Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 99-103 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.10

Cultural Significance of Ganga, The Indian National River

Kusum Dobriyal*

Department of Sanskrit HNB Garhwal University Campus Pauri Garhwal Uttarakhand-246001

*Corresponding Author Email: kusumdobriyal62@rediffmail.com

Received: 19.11.2021; Revised: 11.12.2021; Accepted@ 28.12.2021
©Society for Himalayan Action Research and Development

Abstract

Ganga is declared as National River due to its historical and cultural significance. Ganga is not only a source of agricultural prosperity of India but more than that it is culturally important and is an integral part of human life and its existence. The research paper is an analysis of cultural significance of Ganga river and how it is connected to the philosophy of life. It also depicts that how its uninterrupted flow is important for its purity and cleanliness.

Keywords: Ganga, National River, Cultural Importance, Indian Philosophy

भारतीय राष्ट्रीय नदी ''गंगा'' का सांस्कृतिक महत्व

कुसुम डोबरियाल
संस्कृत विभाग
हे0नं0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर पौड़ी गढ़वाल

सारांश
गंगा नदी को उसकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक महत्ता के लिए राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया है। गंगा देश की कृषि समृद्धि की ही प्रतीक नहीं है, अपितु उससे अधिक यह सांस्कृतिक रूप से महत्व रखती है तथा मानव जीवन तथा उसके अस्तिव का अभिन्न अंग है। प्रस्तुत शोध पत्र में गंगा के सांस्कृतिक महत्व तथा मानव जीवन दर्शन से इसकी निकटता का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। शोधपत्र यह भी चिन्हित करता है कि किस प्रकार गंगा की अविरलता इसकी पवित्रता व निर्मलता अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए आवश्यक है।
कुंजी शब्दः ''गंगा'', राष्ट्रीय नदी, सांस्कृतिक महत्व, भारतीय दर्शन

भारतीय संस्कृति में गंगा, गीता, गणेश, गायत्री व गौ, इन पंच गकारों का विशेष महत्व है। ये सभी सनातन धर्म के पंच प्राण माने गये हैंः–

जननी जन्मभूमिश्च जान्हनी वेदमातरः
सुरभि स्चेति विज्ञयाः पंचैत मातरः स्मृतोः।।

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 99-103 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.10

इन पंच गकारों में सर्वश्रेष्ठ माँ ''गंगा'' एक नदी स्वरूप होते हुए भी सर्वतीर्थ एवं मोक्ष प्रदात्री मानी गई है। महाभारत भीष्म पर्व में वर्णित है किः–

सर्वशास्त्रमयी गीता, सर्वदेवमयो हरीः।
सर्वतीर्थमयी गंगा, सर्ववेदमयो मनुः[1]।।

भारतीय संस्कृति की प्रतीक गंगा नदी का उद्गम स्थल उत्तराखण्ड का गोमुख ग्लेशियर है। यद्यपि ग्लेशियर के अन्दर स्थित मानसरोवर भी गंगा का उद्गम श्रोत शास्त्रों में वर्णित है। पृथ्वी पर अवतरण के पश्चात गंगोत्री से प्रवाहित होकर लगभग 2525 कि0मी0 की दूरी तय करते हुये यह गंगासागर (कोलकता) में सागर में समाहित हो जाती है।

स्कन्दपुराण[2] एवं वराहपुराण[3] में गंगा को उसको महत्ता प्रदर्शित करते हुए एक सहस्त्र नामों से उच्चारित किया गया है। जिनमें से कुछ प्रचलित नाम हैंः– रामगंगा, कालीगंगा, त्रृषिगंगा, धौलीगंगा, वाणगंगा, दूधगंगा, पिण्डरगंगा, भागीरथी, जान्हवी, विष्णुदी, अलकनन्दा, मन्दाकिनी, हरिप्रिया, त्रिपथगा, सुरसरि, पद्मा, कृष्णगंगा, मानसीगंगा, चरणगंगा, मेधना तथा तुगली।

नदियाँ ही सम्पूर्ण विश्व में किसी भी राष्ट्र की संस्कृतिक दूत मानी जाती है। जिस प्रकार नील नदी पुरातन मि्श्र की तथा ह्वांग हो–यांग टी सिक्यांग चीन की सांस्कृतिक परिचायक है। उसी प्रकार ''गंगा नदी'' भारतीय संस्कृति की संवाहक एवं परिचायक है। आर्यावर्त के अनेक तीर्थ गंगोय संस्कृति के अभिन्न एवं अविस्मरणीय अंग है। जिन्होने राष्ट्र की सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनैतिक स्वरूप को समुन्नत बनाया[4], ऐतिहासिक एवं पौराणिक ग्रन्थों में गंगा तटस्थ हरिद्वार, गढ़ मुक्तेश्वर, कान्यकुंज, कानपुर, प्रयागराज, काशी, पाटलीपुत्र तथा कोलकता आदि नगरों की सांस्कृतिक वैशिष्टता प्रदर्शित है। यहां के सांस्कृतिक प्रतीक, उत्कृष्ट वास्तुशिल्प एवं कलात्मक मूर्तियुक्त मन्दिर, विशाल पुरातन दुर्ग, सोपानयुक्त रम्यघाट एवं नयनाभिराम नगर उल्लेखनीय है। गंगा के सांस्कृतिक क्षेत्रान्तर्गत पौराणिक एवं सांस्कृतिक महत्व की सामग्री यथा विभिन्न प्रकार के शिवलिंग, शिलालेख, ताम्रपत्र सिक्के तथा अस्त्र–शस्त्र आदि संग्रहीत है।

गंगा के सुपथ पर स्थित विभिन्न पावन तथा प्रयाग स्थल भी गंगोय संस्कृति के प्रतीक हैं। देवभूमि उत्तराखण्ड के पंच प्रयाग (विष्णुप्रयाग, नन्दप्रयाग, कर्णप्रयाग, रूद्रप्रयाग, देवप्रयाग) प्रयागराज तथा काशी स्थित दशाश्वमेघ घाट पुण्य स्थलों में गणनीय है। इन सभी पुण्यस्थ्लों तथा अन्य तीर्थ स्थलों पर विभिन्न मेले तथा पर्व आयोजित किये जाते हैं, जो भारतीय संस्कृति के परिचायक हैं। हरिद्वार में गंगा

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 99-103 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.10

के तटपर आयोजित कुभ मेला विश्व प्रसिद्ध है। जहां देश–विदेशों के लाखों के संख्या में श्रृद्धालु आकर स्नान करते हुए अपनी कामनाओं की पूर्ति करते हैं। मान्यता है कि कुंभ पर्व पर स्नान करने से मानव पापमुक्त हो जाता हैः–

''गंगे तब दर्शनात् मुक्ति''

गंगा की धरती पर उत्पत्ति भी भारतीय संस्कृति में एक विशिष्ट स्थान रखती है। शास्त्रीय मान्यता है कि गंगाजी ''ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष की दशमी तिथि को धरती पर अवतरित हुई थी। अतः यह तिथि '' गंगा, दशहरा के रूम में मनाई जाती है, :–

दशमी शुल्क पक्षे तु ज्येष्ठ मासे बुधेऽहनि।
अवतीर्णा यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे व सरिद्वरा।।

मान्यता है कि गंगा, दशहरा के दिन गंगा स्नान करने से दस प्रकार के पापों का शमन होता है। ब्रह्मपुराण में कहा गया है किः–

ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
हरते दश पापनि तस्माद् दशहरा स्मृता।।

ज्येष्ठ मास के समान ही बैशाख मास की शुल्क तृतीया को भी ''अक्षय तृतीया'' के रूप में मनाया जाता है। मान्यता है कि इस दिन भगवती ''गंगा'' का आविर्भाव हिमालय के गृह में पुत्री के रूप में हुआ था। इस आशय की व्याख्या वृहद्धर्मपुराण में इस प्रकार की गई हैः–

तृतीयानाम वैशाखे शुक्ला नाम्नाक्षमातिथिः।
हिमालय गृहे यत्र गंगा जाता चतुर्भुजा(5)।।

इसी प्रकार कार्तिकी पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होने वाला काशी का गंगा महोत्सव भी एक सांस्कृतिक कार्यक्रम है। जिसका मुख्य उद्देश्य मां भागीरथी की महिमा का मंचन है। यह आयोजन काशी के दशाश्वमेघ घाट पर प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को किया जाता है। देशभर में गंगा भक्त, सन्त, महात्मा इस समारोह में सम्मिलित होकर स्वयं को धन्य समझते हैं।

गंगा के सांस्कृति महत्व के रूप में एक अन्य मान्यता है कि गंगा के तटपर पित्रऋण से मुक्ति प्राप्त करने कि लिये तीर्थ श्राद्ध किया जाता है। जिससे पित्रऋण से मुक्ति के साथ–साथ आत्मिक शान्ति भी

Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 16, (2021) 99-103 DOI: https://doi.org/10.51220/hjssh.v16i1.10

प्राप्त होती है। शंखस्मृति[6] के अनुसार गंगादि पवित्र नदियों के तट पर तीर्थ–श्राद्ध करने से अक्षय फल की प्राप्ति होती हैः–

गंगायमुनयोस्तीरे अयोध्यामरकण्टके।
नर्मदाया गयातीर्थो सर्वमानन्त्यमनुश्नते।।
वाराणस्या कुरूक्षेत्रे भृगतुंगे हिमालये,
सप्तवेण्यृषिकूपे च तदप्यक्षयमुत्यते।।

कूर्मपुराणानुसार गंगा में स्नान करने से मानव को स्वर्ग की प्राप्ति होती है तथा जन्म–पुर्नजन्म के आवागमन से भी मुक्ति मिल जाती है।

अत्र स्नात्वा दिवंयान्ति ये मृतास्तेअपुनर्मवाः

स्कन्दपुराण में भी कहा गया है किः– मधुमास जैसा कोई मास नही, कृतयुग के समान कोई युग नही, वेद के समान कोई शास्त्र नहीं तथा गंगा के समान कोई तीर्थ नहींः–

न माधवसमो मासो न कृतेन समं युगम्,
न च वेदसमं शास्त्र, न तीर्थ गंगाया सम्म।।

निष्कर्षतया यह विचारणीय है कि इस पतित पाविनी माँ ''गंगा'' की पवित्रता बनाये रखना हम सभी का कर्तव्य है, क्योंकि वर्तमान में विभिन्न प्रकार की मानवीय गतिविधियाँ गंगा की पवित्रता एवं निरन्तरता के लिए बाधक बन रही है। शंकराचार्य गंगाष्टक में गंगा की वन्दना की गई है कि :–

सकलकलुषयंगे स्वर्गसोपानसंगे।
तरलतरतरंगे देवि गंगे प्रसीद।।

वैज्ञानिक शोध एवं अनुसंधान भी यह पुष्टि करते हैं कि गंगा का अविरल प्रवाह ही गंगा की निर्मलता का प्रतीक है। अतः गंगा का संवर्धन एवं संरक्षण करना हम सभी के लिए अत्यन्त आवश्यक है। गंगा की निर्मलता को बनाने के हर सम्भव प्रयास किये जाने चाहिए। साथ ही गंगा की अविरलता को भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए। जिससे इस महान देश की सांस्कृतिक विरासत को अविच्छिन्न एवं सुरक्षित बनाया जा सके।

सन्दर्भित शोध ग्रन्थ

1. महाभारत, भीष्मपर्व, 4312

2. स्कन्दपुराण, काशी 0 पूर्वार्द्ध, अ0 29ण

3. वराहपुराण, अ0 144

4. डॉ0 श्री प्रणवदेवजी, गांगी संस्कृति, गंगाक, कल्याण, गीताप्रेस, गोरखपुर, पृ0 385

5. वृहद्धर्भपुराण, 15 / 22 / 42 / 4

6. शंखस्मृति, 14 / 28–29